

KVS | NVS

SPECIAL EDUCATOR

साक्षात्कार मार्गदर्शिका

A Complete Guide for Special Educator
Interview Preparation

Features

- Real Interview Questions
- Inclusive Education Concepts
- Child Psychology & IEP
- Classroom Management Skills
- Model Answers & Teaching Tips
- Personality Development & Communication Skills



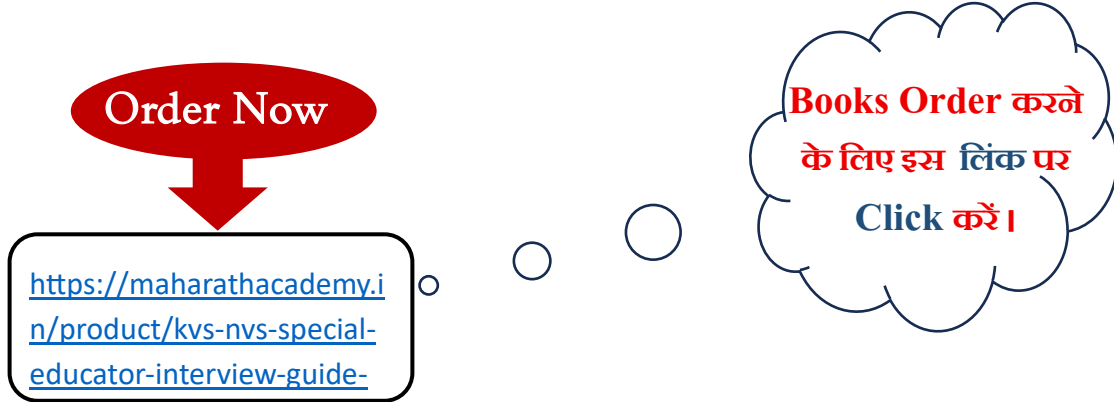
www.maharathacademy.in

KVS/NVS Special Educator Interview Books 2026

Demo PDF

नमस्ते दोस्तों!

KVS/NVS Special Educator Interview Book अब आपके लिए तैयार हैं।



Order करने का आसान तरीका

1. Link पर Click करें
2. हमारी वेबसाइट www.maharathacademy.in पर जाएँ
3. अपनी Book तुरंत order करें।

☎ Helpline Whatsapp No. : 9024960601

✦ अपनी तैयारी को बनाएं आसान और सफलता की तरफ पहला कदम बढ़ाएँ!

क्रमांक	विषय	पेज नं.
1	विशेष शिक्षक की भूमिका और महत्व	—
2	इस पुस्तक का उपयोग कैसे करें?	—

खंड 1 : साक्षात्कार की नींव एवं व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण

अध्याय	विषय	पेज नं.
अध्याय 1	केन्द्रीय विद्यालय संगठन (KVS) एवं नवोदय विद्यालय समिति (NVS) : परिचय, मिशन, विजन एवं कार्यप्रणाली	—
अध्याय 2	आवश्यक दस्तावेज़, फाइल प्रबंधन एवं साक्षात्कार दिवस चेकलिस्ट	—
अध्याय 3	प्रभावशाली आत्म-परिचय (Self Introduction) कैसे तैयार करें?	—
अध्याय 4	विषय परिवर्तन एवं फ्रेशर उम्मीदवारों से जुड़े प्रश्नों के प्रभावी उत्तर	—
अध्याय 5	वेशभूषा (Dress Code), प्रवेश शैली एवं बॉडी लैंग्वेज	—

खंड 2 : विशेष शिक्षा का सैद्धांतिक आधार

अध्याय	विषय	पेज नं.
अध्याय 6	सामान्य, एकीकृत एवं समावेशी शिक्षा में अंतर	—
अध्याय 7	बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disability) : प्रकार, कारण, लक्षण एवं प्रबंधन	—
अध्याय 8	क्रॉस-डिसेबिलिटी दृष्टिकोण : SLD, ASD एवं ADHD	—
अध्याय 9	व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEP) : निर्माण, चरण एवं मूल्यांकन	—
अध्याय 10	RPWD Act 2016 एवं RCI के महत्वपूर्ण नियम एवं प्रावधान	—

खंड 3 : कक्षा प्रबंधन एवं शिक्षण कौशल (Pedagogy)

अध्याय	विषय	पेज नं.
अध्याय 11	TLM एवं Universal Design for Learning (UDL)	—

अध्याय 12	डेमो क्लास की तैयारी : Task Analysis एवं बोर्ड स्किल्स	—
अध्याय 13	व्यवहार प्रबंधन : आक्रामक एवं जिद्दी बच्चों को संभालने की तकनीकें	—
अध्याय 14	Co-Teaching : सामान्य शिक्षकों के साथ समन्वय एवं सहयोग	—

खंड 4 : परिस्थितिजन्य प्रश्न एवं व्यावहारिक चुनौतियाँ

अध्याय	विषय	पेज नं.
अध्याय 15	Situational Questions : “यदि ऐसा हो तो आप क्या करेंगे?”	—
अध्याय 16	Parent Counseling : इनकार कर रहे अभिभावकों से प्रभावी संवाद	—
अध्याय 17	NVS विशेषांक : आवासीय विद्यालयों में ADL प्रशिक्षण	—
अध्याय 18	सामान्य विद्यार्थियों को विशेष बच्चों के प्रति संवेदनशील बनाना	—

खंड 5 : राष्ट्रीय नीतियाँ एवं अंतिम तैयारी

अध्याय	विषय	पेज नं.
अध्याय 19	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) एवं CWSN	—
अध्याय 20	ICT एवं Assistive Technology का प्रभावी उपयोग	—
अध्याय 21	Stress Management एवं कठिन प्रश्नों का शालीन उत्तर	—
अध्याय 22	स्थानांतरण (Transfer) एवं अखिल भारतीय सेवा के लिए मानसिक तैयारी	—
अध्याय 23	Top 50 Interview Questions एवं उनके आदर्श उत्तर	—

परिशिष्ट (Appendix)

क्रमांक	विषय	पेज नं.
1	विशेष शिक्षा शब्दावली (Glossary)	—
2	महत्वपूर्ण शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक शब्दों के अर्थ	—
3	डेमो क्लास हेतु महत्वपूर्ण विषय सूची	—
4	विज्ञान	—
5	गणित	—
6	पर्यावरण अध्ययन (EVS)	—

1 अध्याय

के.वी.एस. (KVS) और एन.वी.एस. (NVS) एक परिचय (मिशन, विजन और कार्यप्रणाली)

विषय प्रवेश:

केन्द्रीय विद्यालय संगठन (KVS) और नवोदय विद्यालय समिति (NVS) भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन दो अत्यंत प्रतिष्ठित और अद्वितीय स्कूली प्रणालियाँ हैं। एक विशेष शिक्षक (Special Educator) के रूप में इन संगठनों में प्रवेश करने से पहले, आपको इनके संगठनात्मक ढांचे (Organizational Structure), दर्शन (Philosophy), और कार्यप्रणाली (Operational Methodology) की गहरी समझ होनी चाहिए। साक्षात्कार पैनल यह सुनिश्चित करना चाहता है कि क्या आप इन संस्थानों के विशिष्ट लक्ष्यों के साथ अपने विशेष शिक्षा के उद्देश्यों का समन्वय कर सकते हैं।

1. केन्द्रीय विद्यालय संगठन (KVS):

(A) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और स्थापना का उद्देश्य (Genesis and Objective)

- **स्थापना:** द्वितीय केंद्रीय वेतन आयोग की सिफारिशों पर नवंबर 1962 में सरकार ने इस योजना को मंजूरी दी और 15 दिसंबर 1963 को 'केन्द्रीय विद्यालय संगठन' का गठन किया गया।
- **मूल उद्देश्य:** इसका प्राथमिक उद्देश्य रक्षा कार्मिकों (Defense Personnel), अर्धसैनिक बलों और केंद्रीय सरकार के स्थानांतरणीय कर्मचारियों (Transferable Central Government Employees) के बच्चों की शिक्षा में निरंतरता (Continuity) बनाए रखना है, ताकि उनके बार-बार होने वाले तबादलों से बच्चों की पढ़ाई बाधित न हो।

(B) विजन और मिशन (Vision and Mission)

- **विजन:** शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता (Excellence) को बढ़ावा देना और स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में 'गति-निर्धारक' (Pace-setting) संस्थान के रूप में उभरना।

- **मिशन:** 1. केंद्रीय सरकार के स्थानांतरणीय कर्मचारियों के बच्चों को शिक्षा के सामान्य पाठ्यक्रम (Common Syllabus - CBSE) और माध्यम (Bilingual - Hindi & English) के द्वारा शैक्षिक आवश्यकता को पूरा करना।
- 2. स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में नए नवाचारों (Innovations) और प्रयोगों को सुगम बनाना।
- 3. राष्ट्रीय एकता (National Integration) की भावना को विकसित करना और बच्चों में भारतीयता की भावना कूट-कूट कर भरना।

(C) के.वी.एस. की कार्यप्रणाली और विशेष शिक्षा का अंतर्संबंध (Operational Dynamic)

- **डे-स्कूल मॉडल (Day School Model):** के.वी.एस. मुख्य रूप से एक डे-स्कूल प्रणाली है। यहाँ बच्चे एक निश्चित समय के लिए आते हैं और फिर अपने घर लौट जाते हैं।
- **विविधता (Diversity):** यहाँ देश के विभिन्न राज्यों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चे एक ही कक्षा में बैठते हैं।
- **विशेष शिक्षक का तकनीकी उत्तरदायित्व (Technical Responsibility):** के.वी.एस. में विशेष शिक्षक को **समावेशी कक्षा मॉडल (Inclusive Classroom Model)** पर काम करना होता है। यहाँ आपका मुख्य कार्य सामान्य शिक्षकों के साथ **सह-शिक्षण (Co-teaching)** करना, **सार्वभौमिक अधिगम डिजाइन (UDL)** के तहत पाठ योजनाएं बनाना और मुख्यधारा की कक्षाओं में पढ़ने वाले विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए **लचीली मूल्यांकन प्रणालियाँ (Flexible Assessment Systems)** तैयार करना है।

2. नवोदय विद्यालय समिति (NVS):

(A) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और स्थापना का उद्देश्य (Genesis and Objective)

- **स्थापना:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 1986 के अंतर्गत एक अनूठे प्रयोग के रूप में 'जवाहर नवोदय विद्यालयों' (JNV) की शुरुआत की गई।
- **मूल उद्देश्य:** इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों की उन छिपी हुई प्रतिभाओं (Talented Rural Children) को खोजना और उन्हें आधुनिक, सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करना है, जो सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े होने के कारण आगे नहीं बढ़ पाते। इसमें ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों के लिए 75% सीटें आरक्षित होती हैं।

(B) विजन और मिशन (Vision and Mission)

- **विजन:** ग्रामीण भारत के प्रतिभाशाली बच्चों को उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना त्रि-भाषा सूत्र (Three-Language Formula) के तहत गुणवत्तापूर्ण आधुनिक शिक्षा प्रदान करना।
- **मिशन:**
 1. संस्कृति के मूल्यों को बढ़ावा देना, पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाना और साहसिक गतिविधियों (Adventure Activities) को प्रोत्साहित करना।
 2. एक जिले से दूसरे जिले में छात्रों के **प्रवासन (Migration Scheme)** के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करना।
 3. प्रत्येक जिले में स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक केंद्र बिंदु (Focal Point) के रूप में कार्य करना।

(C) एन.वी.एस. की कार्यप्रणाली और विशेष शिक्षा का अंतर्संबंध (Operational Dynamic)

- **पूर्णतः आवासीय मॉडल (Fully Residential Model):** जे.एन.वी. अनिवार्य रूप से सह-शैक्षणिक और आवासीय विद्यालय हैं। यहाँ छात्र और शिक्षक एक ही परिसर में चौबीसों घंटे रहते हैं।
- **विशेष शिक्षक का तकनीकी उत्तरदायित्व (Technical Responsibility):** एन.वी.एस. में विशेष शिक्षक की भूमिका केवल स्कूल के 6 घंटों तक सीमित नहीं होती। यहाँ आपको **दैनिक जीवन की गतिविधियों (ADL - Activities of Daily Living)** के प्रशिक्षण पर अत्यधिक बल देना होता है। छात्रावास (Hostel Layout), भोजन कक्ष (Mess), और खेल के मैदान को **बाधा-मुक्त वातावरण (Barrier-Free Environment)** में बदलना और बच्चों के सामाजिक-संवेगात्मक समायोजन (Socio-Emotional Adjustment) की निगरानी करना आपकी मुख्य जिम्मेदारी होती है।

साक्षात्कार के दृष्टिकोण से इस अध्याय का महत्व: एक विशेष शिक्षक के रूप में आपकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि आप अपनी 'विशेषज्ञता' (Specialization) के दायरे से बाहर निकलकर अन्य अक्षमताओं को कितनी जल्दी पहचानते हैं (Screening)। के.वी.एस. (KVS) और एन.वी.एस. (NVS) की समावेशी कक्षाओं में सबसे बड़ी चुनौती इन 'अदृश्य अक्षमताओं' (Invisible Disabilities) को पहचानना है, क्योंकि ये बच्चे देखने में बिल्कुल सामान्य लगते हैं। इस अध्याय में हम इन स्थितियों की तकनीकी गहराई और उनके कक्षा प्रबंधन (Classroom Management) पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

1. विशिष्ट अधिगम अक्षमता (Specific Learning Disability - SLD)

तकनीकी समझ (Technical Understanding): SLD एक तंत्रिका संबंधी (Neurological) समस्या है जो मस्तिष्क की जानकारी को 'प्रोसेस' (संसाधित) करने की क्षमता को प्रभावित करती है। **सबसे महत्वपूर्ण बात:** इन बच्चों का बुद्धि स्तर (IQ) बिल्कुल सामान्य (90-110) या उससे ऊपर होता है। ये बच्चे आलसी या मंदबुद्धि नहीं होते, बस उनके सीखने का तरीका (मस्तिष्क की बनावट/Wiring) अलग होता है।

SLD के मुख्य प्रकार (Types of SLD in detail):

- **डिस्लेक्सिया (Dyslexia - पठन वैकल्य):** पढ़ने और शब्दों को डिकोड करने में समस्या। बच्चा अक्षरों को उल्टा देखता है (जैसे 'b' को 'd', 'p' को 'q' पढ़ना) या शब्दों को उल्टा पढ़ता है (जैसे 'saw' को 'was')। इन्हें ध्वनि-विज्ञान (Phonological awareness) में अत्यधिक कठिनाई होती है।
- **डिसग्राफिया (Dysgraphia - लेखन वैकल्य):** लिखने की प्रक्रिया में तकलीफ। इनकी लिखावट (Handwriting) बहुत खराब होती है, शब्दों के बीच की जगह (Spacing) असमान होती है, और अपने विचारों को कागज़ पर उतारने में इन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ता है। इनकी सूक्ष्म गामक कौशल (Fine motor skills) कमजोर होती हैं।
- **डिस्कैलकुलिया (Dyscalculia - गणितीय वैकल्य):** संख्याओं, गणितीय चिह्नों (+, -, x, ÷) और दिशाओं (Left/Right, Up/Down) को समझने में परेशानी। इन्हें समय देखने और पैसे गिनने में भी बहुत कठिनाई आ सकती है।

- **डिस्प्रेक्सिया (Dyspraxia):** इसे 'मोटर कोऑर्डिनेशन डिसऑर्डर' भी कहते हैं। इसमें शारीरिक संतुलन और गामक समन्वय की समस्या होती है (जैसे शर्ट के बटन बंद करना, जूते के फीते बांधना या कैच पकड़ना)।
- **डिस्फेजिया / अफेजिया (Dysphasia / Aphasia):** भाषा (Language) को समझने और बोलने में तंत्रिका संबंधी समस्या।

कक्षा प्रबंधन और CBSE के प्रावधान (Accommodations):

- इन बच्चों को 'मल्टी-सेंसरी' (VAKT - Visual, Auditory, Kinesthetic, Tactile) दृष्टिकोण से पढ़ाना चाहिए।
- CBSE इन बच्चों को परीक्षा में प्रति घंटे 20 मिनट का अतिरिक्त समय (Compensatory time) देता है।
- डिसग्राफिया के बच्चों को 'लेखक' (Scribe) या कंप्यूटर पर टाइप करने की सुविधा मिलती है।
- डिस्कैलकुलिया के लिए बुनियादी कैलकुलेटर का उपयोग और तीसरी भाषा से छूट (Exemption) का भी प्रावधान है।

2. ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम विकार (Autism Spectrum Disorder - ASD / स्वलीनता)

तकनीकी समझ: ऑटिज़्म एक विकासात्मक विकार (Neurodevelopmental disorder) है जो मुख्य रूप से व्यक्ति के सामाजिक संपर्क, संचार और व्यवहार को प्रभावित करता है। इसे 'स्पेक्ट्रम' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसके लक्षण और गंभीरता हर बच्चे में अलग-अलग (हल्के से लेकर अति-गंभीर तक) होती है। एक ऑटिस्टिक बच्चा बहुत बुद्धिमान भी हो सकता है (Asperger's Syndrome) या उसे जीवन भर व्यापक समर्थन की आवश्यकता भी हो सकती है।

ऑटिज़्म का त्रिक (Triad of Impairments - by Lorna Wing):

1. **सामाजिक संपर्क में कमी (Impairment in Social Interaction):** नेत्र संपर्क (Eye contact) न करना, अपने नाम पुकारने पर प्रतिक्रिया न देना, अकेले खेलना पसंद करना और दूसरों की भावनाओं (Empathy) को न समझ पाना।
2. **सामाजिक संचार में कमी (Impairment in Social Communication):** बोलने में देरी, या यदि बोलते हैं तो एक ही पंक्ति को बार-बार दोहराना (Echolalia - इकोलेलिया)। गैर-मौखिक संचार (जैसे इशारे करना या चेहरे के भाव समझना) में भारी कठिनाई।

3. **रूढ़िबद्ध/दोहरावदार व्यवहार (Restricted/Repetitive Behavior):** एक ही जैसी दिनचर्या (Routine) पसंद करना। यदि उनकी दिनचर्या में छोटा सा भी बदलाव हो, तो वे अत्यधिक परेशान (Meltdown) हो जाते हैं। खुद को उत्तेजित करने वाले व्यवहार (Stimming) जैसे हाथ फड़फड़ाना (Hand-flapping) या गोल-गोल घूमना इनमें आम है।

संवेदी मुद्दे (Sensory Issues in ASD): ऑटिस्टिक बच्चे अपने वातावरण के प्रति या तो **हाइपर-सेंसिटिव (अति-संवेदनशील)** होते हैं (जैसे- कुकर की सीटी या तेज रोशनी से डर जाना) या **हाइपो-सेंसिटिव (अल्प-संवेदनशील)** होते हैं (जैसे- चोट लगने पर दर्द महसूस न होना या चीजों को बार-बार सूंघना)।

कक्षा प्रबंधन की तकनीकें (Classroom Management):

- **विजुअल शेड्यूलस (Visual Schedules):** ऑटिस्टिक बच्चे 'विजुअल लर्नर्स' होते हैं। उनकी पूरी दिनचर्या को चित्रों (Pictograms) के माध्यम से बोर्ड पर लगाना चाहिए ताकि उन्हें पता हो कि आगे क्या होने वाला है।
- **TEACCH एप्रोच:** कक्षा का भौतिक ढांचा एकदम स्पष्ट होना चाहिए (काम करने की जगह अलग, खेलने की जगह अलग)।
- **PECS (Picture Exchange Communication System):** जो बच्चे बोल नहीं पाते, उन्हें फ्लैशकार्ड/चित्रों का आदान-प्रदान करके अपनी ज़रूरत (जैसे पानी पीना) व्यक्त करना सिखाना।
- **सोशल स्टोरीज (Social Stories):** छोटी-छोटी कहानियों (Carol Gray द्वारा विकसित) के माध्यम से उन्हें सामाजिक परिस्थितियों (जैसे प्रार्थना सभा में कैसे खड़े होना है) के बारे में सिखाना।

3. ए.डी.एच.डी. (Attention Deficit Hyperactivity Disorder)

तकनीकी समझ: ADHD मस्तिष्क की 'कार्यकारी कार्यप्रणाली' (Executive Functioning) का विकार है, जहाँ डोपामाइन (Dopamine) हार्मोन का नियमन ठीक से नहीं होता। बच्चा जान-बूझकर बदमाशी नहीं करता, बल्कि उसका मस्तिष्क अपने 'आवेगों' (Impulses) को नियंत्रित नहीं कर पाता।

ADHD के 3 मुख्य लक्षण (Core Symptoms):

1. **ध्यानाभाव (Inattention):** एक कार्य पर लंबे समय तक ध्यान केंद्रित न कर पाना, निर्देशों को भूल जाना, छोटी-छोटी गलतियाँ करना और अपना सामान खो देना।
2. **अति-सक्रियता (Hyperactivity):** एक जगह टिक कर न बैठ पाना, लगातार हाथ-पैर हिलाते रहना (Fidgeting), और बिना आवश्यकता के बहुत अधिक बोलना।

3. **आवेगशीलता (Impulsivity):** बिना सोचे-समझे कार्य करना, दूसरों की बातों के बीच में टोकना, और अपनी बारी (Turn) का इंतज़ार न कर पाना।

कक्षा प्रबंधन की तकनीकें (Classroom Management):

- **बैठने की व्यवस्था (Seating Arrangement):** बच्चे को कक्षा में सबसे आगे, शिक्षक के ठीक सामने बिठाना चाहिए, और खिड़की/दरवाज़े (ध्यान भटकाने वाली चीज़ों) से दूर रखना चाहिए।
- **चंकिंग (Chunking):** बड़े कार्यों को छोटे-छोटे और प्रबंधनीय हिस्सों में विभाजित करना। एक बार में केवल एक ही निर्देश (Instruction) देना।

साक्षात्कार के दृष्टिकोण से इस अध्याय का सैद्धांतिक महत्व: के.वी.एस. (KVS) और एन.वी.एस. (NVS) जैसे राष्ट्रीय संस्थानों के साक्षात्कार में पैनल आपको तनावपूर्ण और वास्तविक जीवन की परिस्थितियां (Case Studies) देता है। इन प्रश्नों का कोई रटा-रटाया उत्तर नहीं होता। पैनल यह जाँचना चाहता है कि दबाव (Pressure) की स्थिति में आपका 'भावनात्मक बुद्धिमत्ता' (Emotional Intelligence) कैसा कार्य करता है। क्या आप समस्या को देखकर घबराते हैं, या आप RPWD अधिनियम, UDL और ABA जैसे वैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग करके उस स्थिति का तार्किक और समावेशी समाधान निकालते हैं?

1. परिस्थितिजन्य प्रश्नों का उत्तर देने का वैज्ञानिक ढांचा: 'STAR' तकनीक (The STAR Method)

जब भी पैनल आपको कोई "आप क्या करेंगे अगर..." वाली परिस्थिति दे, तो तुरंत उत्तर देने के बजाय 2 सेकंड रुकें और अपने मस्तिष्क में STAR तकनीक का उपयोग करके उत्तर की संरचना तैयार करें:

- **S - Situation (परिस्थिति का आकलन):** सबसे पहले स्थिति को शांत दिमाग से समझें। यह पहचानें कि समस्या व्यवहार से जुड़ी है, शैक्षणिक है, या बुनियादी ढाँचे से संबंधित है।
- **T - Task (कर्तव्य का निर्धारण):** एक विशेष शिक्षक के रूप में आपका वैधानिक और नैतिक कर्तव्य (Legal & Ethical Duty) क्या है? (जैसे- क्या यहाँ 'शून्य अस्वीकृति' का नियम लागू होता है? क्या यहाँ 'शारीरिक सुरक्षा' प्राथमिकता है?)
- **A - Action (कार्रवाई):** आप कौन से ठोस और वैज्ञानिक कदम उठाएंगे? (जैसे- मैं FBA करूँगा, मैं सामान्य शिक्षक के साथ साझा-योजना बनाऊँगा, या मैं 'कबाड़ से जुगाड़' TLM का उपयोग करूँगा।)
- **R - Result (सकारात्मक परिणाम):** आपकी कार्रवाई से क्या अंतिम समावेशी परिणाम निकलेगा? (जैसे- बच्चा मुख्यधारा में शामिल हो जाएगा और उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा।)

2. परिस्थिति आधारित प्रश्नों का उत्तर देते समय 'स्वर्णिम नियम' (Golden Rules to Remember)

साक्षात्कार में इन नियमों का उल्लंघन आपको तुरंत दौड़ से बाहर कर सकता है:

- **सज़ा का पूर्ण निषेध (No Punishment):** किसी भी परिस्थिति में आप बच्चे को मारेंगे नहीं, ज़ोर से डांटेंगे नहीं और न ही उसे कक्षा से बाहर (Get out) निकालेंगे।
- **अलगाव का विरोध (No Isolation):** आप कभी यह नहीं कहेंगे कि "मैं इस बच्चे को सामान्य बच्चों से अलग बिठा दूँगा।" आपका हर उत्तर 'पूर्ण समावेशन' (Full Inclusion) की ओर इशारा करना चाहिए।
- **सकारात्मक सहयोग (Collaboration):** आप अकेले सुपरमैन नहीं हैं। आपके उत्तरों में हमेशा 'प्राचार्य (Principal)', 'सामान्य शिक्षकों (Regular Teachers)' और 'अभिभावकों (Parents)' के साथ टीम वर्क (Teamwork) झलकना चाहिए।

- **शिकायत न करना (No Complaining):** यदि संसाधनों की कमी की स्थिति दी जाए, तो आप प्रबंधन या सरकार की शिकायत नहीं करेंगे, बल्कि 'रचनात्मक समाधान' (Creative solutions) प्रस्तुत करेंगे।

3. 49 विस्तृत परिस्थिति आधारित प्रश्न और उनके वैज्ञानिक समाधान (Top 49 Situational Case Studies)

श्रेणी 1: आक्रामक और समस्यात्मक व्यवहार (Aggressive & Problematic Behavior)

परिस्थिति 1: कक्षा में हिंसक व्यवहार (कॉपी फाड़ना और मेज उलटना)

- **विस्तृत समाधान:** मैं बच्चे पर चिल्लाऊंगा नहीं, क्योंकि इससे उसकी उत्तेजना और बढ़ेगी। मेरी पहली प्राथमिकता शारीरिक सुरक्षा है, इसलिए मैं अन्य बच्चों को तुरंत सुरक्षित दूरी पर करूँगा। मैं बच्चे को शांत करने के लिए 'संवेदी डी-एस्केलेशन' (लाइट कम करना, शोर कम करना) तकनीक अपनाऊँगा। स्थिति शांत होने के बाद, मैं 'कार्यात्मक व्यवहार आकलन' (FBA) करूँगा। यदि मुझे पता चलता है कि यह 'कार्य से बचने' (Escape) का प्रयास था, तो मैं भविष्य में 'कार्य विश्लेषण' (Task Analysis) के माध्यम से उसके अकादमिक कार्य को बहुत छोटे और आसान टुकड़ों में बाँट दूँगा।

परिस्थिति 2: प्रार्थना सभा में 'मेल्टडाउन' (Meltdown)

- **विस्तृत समाधान:** ऑटिज्म से प्रभावित बच्चे के लिए लाउडस्पीकर का शोर एक 'संवेदी अतिभार' (Sensory Overload) है। मैं इसे ज़िद (Tantrum) नहीं मानूँगा। मैं उसे तुरंत भीड़ और शोर से निकालकर एक शांत संसाधन कक्ष में ले जाऊँगा। भविष्य की प्रार्थना सभाओं के लिए मैं 'क्रमिक विसुग्राहीकरण' (Gradual Desensitization) का उपयोग करूँगा और उसे 'नॉइज़-कैंसलिंग हेडफोन' (Noise-canceling headphones) पहनने की अनुमति दूँगा ताकि वह बिना किसी संवेदी बाधा के मुख्यधारा का हिस्सा बन सके।

परिस्थिति 3: कक्षा में लगातार भागना (Hyperactivity / ADHD)

- **विस्तृत समाधान:** एक ADHD बच्चे को सज़ा देकर कुर्सी पर नहीं बिठाया जा सकता क्योंकि यह एक न्यूरोलॉजिकल आवश्यकता है। मैं उसे डांटने के बजाय उसकी अतिरिक्त ऊर्जा को 'दिशा' (Channelize) दूँगा। मैं उसे कक्षा में छोटे-छोटे सक्रिय कार्य (जैसे कॉपियां बांटना, चॉक लाना या बोर्ड साफ करना) दूँगा। साथ ही, मैं उसे कक्षा में सबसे आगे, खिड़की और दरवाज़े से दूर बिठाऊँगा ताकि उसका ध्यान कम से कम भटके।

परिस्थिति 4: सहपाठियों को काटना (Biting Peers)

- **विस्तृत समाधान:** काटना (Biting) अक्सर एक 'संवेदी आवश्यकता' (Sensory need) या 'संवाद न कर पाने की कुंठा' का परिणाम होता है। मैं 'विभेदक पुनर्बलन' (DRI) का उपयोग करूँगा। मैं बच्चे को

चबाने के लिए एक सुरक्षित 'च्युइंग ट्यूब' (Chewing tube) दूँगा ताकि उसकी संवेदी आवश्यकता पूरी हो सके। इसके साथ ही, यदि वह पूरे पीरियड में किसी को नहीं काटता है, तो मैं उसे 'टोकन इकॉनमी' के तहत पुरस्कृत करूँगा।

परिस्थिति 5: शिक्षक पर थूकना (Spitting)

- **विस्तृत समाधान:** थूकना अक्सर 'ध्यान आकर्षित करने' (Attention-seeking) का एक तरीका होता है। यदि FBA में यह सिद्ध होता है, तो मैं 'नियोजित अनदेखी' (Planned Ignoring) का उपयोग करूँगा। मैं उस पर गुस्सा नहीं करूँगा, न ही उसे टोकूँगा, क्योंकि नकारात्मक ध्यान भी एक प्रकार का ध्यान ही है। मैं तब तक प्रतिक्रिया नहीं दूँगा जब तक वह अनुचित व्यवहार बंद न कर दे। जब वह शांति से बैठेगा, मैं तुरंत उसकी प्रशंसा करूँगा (सकारात्मक पुनर्बलन)।

परिस्थिति 6: स्वयं को चोट पहुँचाना (Self-Injurious Behavior - सिर पटकना)

विस्तृत समाधान: स्वयं को चोट पहुँचाने वाले व्यवहार में 'अनदेखी' की तकनीक का उपयोग नहीं किया जा सकता क्योंकि इसमें जान का जोखिम है। मैं तुरंत शारीरिक हस्तक्षेप करूँगा। मैं उसके सिर के पीछे अपना हाथ या कुशन लगा दूँगा। फिर मैं

साक्षात्कार के दृष्टिकोण से इस अध्याय का विस्तृत और सैद्धांतिक महत्व: के.वी.एस. (KVS) और एन.वी.एस. (NVS) की 'समावेशी शिक्षा' (Inclusive Education) का अर्थ केवल एक विशेष बच्चे (CWSN) को सामान्य कक्षा में भौतिक रूप से बिठा देना नहीं है। यदि उस बच्चे को उसके सहपाठी (Peers) चिढ़ाते हैं, उससे दूर भागते हैं या उसे समूह में शामिल नहीं करते हैं, तो वह 'समावेशन' नहीं, बल्कि एक दर्दनाक 'सामाजिक अलगाव' (Social Isolation) बन जाता है। साक्षात्कार पैनल इस अध्याय के माध्यम से आपकी उस मनोवैज्ञानिक क्षमता का परीक्षण करेगा जिसके द्वारा आप सामान्य बच्चों के दृष्टिकोण, भय और अज्ञानता को बदलकर उन्हें विशेष बच्चों का 'रक्षक' (Protector) और 'मित्र' बनाते हैं।

1. संवेदीकरण का मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय आधार (Psychological Basis of Sensitization)

विशेष बच्चे के प्रति सामान्य बच्चों का दृष्टिकोण रातों-रात नहीं बदलता। एक विशेष शिक्षक को निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग करना पड़ता है:

- **गॉर्डन ऑलपोर्ट का 'संपर्क परिकल्पना' सिद्धांत (Allport's Contact Hypothesis):** यह समाजशास्त्र का एक प्रसिद्ध सिद्धांत है जो कहता है कि जब दो अलग-अलग समूहों (जैसे सामान्य बच्चे और विशेष बच्चे) के बीच 'समान दर्जे' (Equal status) के साथ 'संरचित और सकारात्मक संपर्क' (Structured Contact) करवाया जाता है, तो उनके बीच का पूर्वाग्रह (Prejudice) और रूढ़िवाद (Stereotypes) अपने आप कम हो जाता है।
- **अल्बर्ट बंडूरा का 'सामाजिक अधिगम सिद्धांत' (Social Learning Theory):** बच्चे उपदेशों से नहीं, बल्कि 'अवलोकन' (Observation) और 'नकल' (Imitation) से सीखते हैं। यदि कक्षा का शिक्षक विशेष बच्चे के साथ चिड़चिड़ापन दिखाता है, तो पूरी कक्षा वैसा ही करेगी। यदि शिक्षक विशेष बच्चे के साथ अत्यधिक सम्मान, धैर्य और परानुभूति (Empathy) से बात करता है, तो सामान्य बच्चे अचेतन रूप से उस सम्मानजनक व्यवहार की नकल करेंगे (Modeling)।

2. सहानुभूति (Sympathy) बनाम समानुभूति (Empathy): तकनीकी अंतर

संवेदीकरण का मुख्य उद्देश्य बच्चों में 'समानुभूति' जगाना है, 'सहानुभूति' नहीं।

- **सहानुभूति (Sympathy):** इसका अर्थ है 'दया करना' ("बेचारा चल नहीं सकता")। यह दृष्टिकोण विशेष बच्चे को कमजोर और आश्रित (Dependent) बनाता है। यह समानता के सिद्धांत के विरुद्ध है।

- **समानुभूति (Empathy):** इसका अर्थ है 'स्वयं को दूसरे के स्थान पर रखकर महसूस करना'। (जैसे- "अगर मुझे यह कार्य करने में दिक्कत होती, तो मैं क्या चाहता कि मेरे दोस्त मेरी मदद कैसे करें?")। एक विशेष शिक्षक कक्षा में दया नहीं, बल्कि इसी समानुभूति का निर्माण करता है।

3. सामान्य बच्चों को संवेदनशील बनाने की वैज्ञानिक और व्यावहारिक रणनीतियाँ

एक विशेष शिक्षक सामान्य बच्चों की अज्ञानता को दूर करने के लिए निम्नलिखित उन्नत रणनीतियों का उपयोग करता है:

A. बडी सिस्टम और सहपाठी-शिक्षण (Buddy System & Peer Tutoring):

- यह समावेशन का सबसे शक्तिशाली उपकरण है। शिक्षक कक्षा के संवेदनशील और नेतृत्व क्षमता वाले 2-3 सामान्य बच्चों का चयन करता है और उन्हें विशेष बच्चे का 'बडी' (Buddy / मित्र) नियुक्त करता है।
- बडी का कार्य बच्चे का होमवर्क करना नहीं है, बल्कि उसे पुस्तकालय ले जाना, लंच में साथ बैठना या कक्षा के नोट्स साझा करना है।
- **वैज्ञानिक लाभ:** इससे विशेष बच्चे को सामाजिक सुरक्षा मिलती है और सामान्य बच्चे में 'उत्तरदायित्व' (Responsibility) और 'नेतृत्व' (Leadership) का विकास होता है।

B. 'सिमुलेशन' या अनुकरण अभ्यास (Disability Simulation Exercises):

- बच्चों को भाषण देने के बजाय, उन्हें 'महसूस' कराएं।
- उदाहरण: 'विशिष्ट अधिगम अक्षमता' (Dyslexia) समझाने के लिए, सामान्य बच्चों को उल्टे हाथ से लिखने को कहें, या दर्पण (Mirror) में देखकर कोई वाक्य पढ़ने को कहें। जब वे इसमें संघर्ष करेंगे, तो उन्हें समझ आएगा कि डिस्लेक्सिया वाले बच्चे का मस्तिष्क रोजाना कितना संघर्ष करता है। इससे मजाक उड़ाने की प्रवृत्ति तुरंत समाप्त हो जाती है और गहरा सम्मान पैदा होता है।

C. सहयोगात्मक अधिगम और संरचित खेल (Collaborative Learning & Structured Play):

- खेल के मैदान में या प्रोजेक्ट कार्य में विशेष बच्चे को कभी अलग न छोड़ें।
- समूहों (Groups) का निर्माण इस प्रकार करें कि प्रत्येक बच्चे की एक विशिष्ट भूमिका हो। यदि कोई बच्चा बोल नहीं सकता, तो प्रोजेक्ट में उसे 'चित्र बनाने' या 'चार्ट पकड़ने' का कार्य दें, ताकि समूह के सामान्य बच्चों को यह अहसास हो कि विशेष बच्चे के पास भी अपनी 'क्षमताएं' (Potential) हैं।

D. बिब्लियोथेरेपी और रोल-प्ले (Bibliotherapy & Social Stories):

- बच्चों के मस्तिष्क को कहानियों से सबसे जल्दी बदला जा सकता है। कक्षा में ऐसी कहानियों या फिल्मों (जैसे- तारे ज़मीन पर) का उपयोग करें जहाँ मुख्य पात्र कोई विशेष बच्चा हो।
- 'रोल-प्ले' (Role-play) के माध्यम से बच्चों को सिखाएं कि यदि कोई बाहरी व्यक्ति उनके विशेष सहपाठी का मजाक उड़ाए, तो उन्हें एक 'रक्षक' (Bystander Intervention) के रूप में कैसे खड़ा होना है।

20 अध्याय

तकनीक (ICT) और सहायक उपकरणों (Assistive Technology) का उपयोग

साक्षात्कार के दृष्टिकोण से इस अध्याय का विस्तृत और सैद्धांतिक महत्व: के.वी.एस. (KVS) और एन.वी.एस. (NVS) जैसे संस्थान 'डिजिटल इंडिया' (Digital India) विज्ञान के ध्वजवाहक हैं। एक विशेष शिक्षक (Special Educator) के लिए तकनीक केवल स्मार्टबोर्ड पर वीडियो दिखाने तक सीमित नहीं है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए तकनीक कोई 'विलासिता' (Luxury) नहीं है, बल्कि यह उनकी 'आवाज़', उनके 'हाथ' और उनकी 'आँखें' है। साक्षात्कार पैनल इस अध्याय के माध्यम से आपकी तकनीकी साक्षरता (Tech-literacy) का मूल्यांकन करेगा। वे यह जाँचना चाहेंगे कि क्या आप महंगी मशीनों के बिना भी 'लो-टेक' (Low-tech) उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं, और क्या आपको विभिन्न अक्षमताओं के अनुसार विशिष्ट सहायक उपकरणों (Assistive Devices) का तकनीकी ज्ञान है या नहीं।

1. शैक्षिक प्रौद्योगिकी (Ed-Tech) और सहायक प्रौद्योगिकी (Assistive Tech) में तकनीकी अंतर

साक्षात्कार में इन दोनों अवधारणाओं के बीच भ्रमित न हों। इनके बीच एक बहुत ही स्पष्ट सैद्धांतिक और कार्यात्मक अंतर है:

- **शैक्षिक प्रौद्योगिकी (Educational Technology / ICT):** यह वह तकनीक है जिसका उपयोग शिक्षक सभी बच्चों को पढ़ाने के लिए करता है। इसका उद्देश्य पूरी कक्षा के लिए 'शिक्षण और अधिगम' (Teaching and Learning) को अधिक रोचक बनाना है। (जैसे- स्मार्टबोर्ड, प्रोजेक्टर, यूट्यूब वीडियो, या पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन)। यह सार्वभौमिक (Universal) है।
- **सहायक प्रौद्योगिकी (Assistive Technology - AT):** यह वह तकनीक है जो किसी विशेष बच्चे की विशिष्ट 'अक्षमता' (Disability) के कारण उत्पन्न होने वाली बाधा को 'बायपास' (Bypass) या दूर करने के लिए उपयोग की जाती है। यह बच्चे को वह कार्य करने में सक्षम बनाती है जो वह अपनी अक्षमता के कारण अन्यथा नहीं कर पाता। यह व्यक्तिगत (Individualized) होती है। (जैसे- दृष्टिबाधित बच्चे के लिए 'स्क्रीन रीडर', या गैर-मौखिक बच्चे के लिए 'पीईसीएस' ऐप)।

प्रसिद्ध कथन: "सामान्य बच्चों के लिए तकनीक चीजों को आसान बनाती है, लेकिन विशेष बच्चों के लिए तकनीक चीजों को 'संभव' (Possible) बनाती है।"

2. सहायक प्रौद्योगिकी का वैज्ञानिक ढांचा: SETT फ्रेमवर्क (The SETT Framework)

जब कोई विशेष शिक्षक यह तय करता है कि किस बच्चे को कौन सा उपकरण दिया जाए, तो वह हवा में निर्णय नहीं लेता। इसके लिए जॉय ज़बाला (Joy Zabala) द्वारा विकसित SETT फ्रेमवर्क का विश्व स्तर पर उपयोग किया जाता है। साक्षात्कार में इसका उल्लेख आपको एक 'विशेषज्ञ' सिद्ध करेगा:

1. **S - Student (छात्र):** सबसे पहले छात्र की शक्तियों, कमजोरियों और उसकी विशिष्ट आवश्यकताओं का गहन मूल्यांकन करना।
2. **E - Environment (वातावरण):** यह देखना कि तकनीक का उपयोग कहाँ होगा? (क्या स्कूल के दूरदराज क्षेत्र में इंटरनेट है? क्या कक्षा में शोर है?)
3. **T - Tasks (कार्य):** छात्र को कौन सा कार्य करने में बाधा आ रही है? (क्या वह लिख नहीं पा रहा है, पढ़ नहीं पा रहा है, या संवाद नहीं कर पा रहा है?)
4. **T - Tools (उपकरण):** उपरोक्त तीन कारकों का विश्लेषण करने के बाद, अंत में सबसे उपयुक्त उपकरण (Tool) का चयन करना।

3. सहायक प्रौद्योगिकी का स्पेक्ट्रम (The Continuum of Assistive Technology)

सहायक उपकरण का अर्थ केवल कंप्यूटर या रोबोट नहीं है। लागत और जटिलता के आधार पर इसे 3 वैज्ञानिक श्रेणियों में बाँटा गया है:

A. निम्न-तकनीक उपकरण (Low-Tech Devices): ये वे उपकरण हैं जिनमें कोई बैटरी, बिजली या इलेक्ट्रॉनिक सर्किट नहीं होता। ये सस्ते, आसानी से उपलब्ध और दूरदराज के क्षेत्रों (जैसे NVS के ग्रामीण परिसरों) के लिए वरदान हैं।

- **उदाहरण:** खराब पकड़ (Poor grip) वाले बच्चे के लिए रबर का 'पेंसिल ग्रिपर' (Pencil Gripper), डिस्लेक्सिया के लिए पढ़ते समय लाइनों को ट्रैक करने वाला गते का 'रीडिंग गाइड' (Reading Guide/Line Tracker), बड़े प्रिंट वाली किताबें, और ऑटिज़्म के लिए हाथ में पकड़ने वाला 'फिजेट स्पिनर' (Fidget Spinner)।

B. मध्यम-तकनीक उपकरण (Mid-Tech Devices): ये वे उपकरण हैं जिनमें साधारण बैटरी या इलेक्ट्रॉनिक सर्किट का उपयोग होता है, लेकिन इनके लिए किसी उन्नत कंप्यूटर प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती।

- **उदाहरण:** बैटरी से चलने वाली टॉकिंग डिक्शनरी (Talking Dictionary), साधारण वॉयस रिकॉर्डर (ताकि बच्चा शिक्षक के व्याख्यान को रिकॉर्ड कर सके), श्रवणबाधित बच्चों के लिए पॉकेट हियरिंग एड (Pocket Hearing Aid), और आवाज़ निकालने वाले साधारण बटन या स्विच।

C. उच्च-तकनीक उपकरण (High-Tech Devices): ये अत्यधिक उन्नत, महंगे और कंप्यूटर/माइक्रोचिप आधारित उपकरण हैं जिनके उपयोग के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

- **उदाहरण:** आईपैड (iPad), ऑगमेंटेटिव और अल्टरनेटिव कम्युनिकेशन (AAC) सॉफ्टवेयर, 'आई-ट्रैकिंग' (Eye-tracking) डिवाइस, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित स्पीच-टू-टेक्स्ट सॉफ्टवेयर।

4. 21 अक्षमताओं के अनुसार विशिष्ट सहायक उपकरणों का वैज्ञानिक वर्गीकरण

एक उत्कृष्ट विशेष शिक्षक को अक्षमता के आधार पर उपकरणों के तकनीकी नाम याद होने चाहिए:

1. दृष्टिबाधिता (Visual Impairment - VI) के लिए:

- **स्क्रीन रीडर (Screen Readers):** यह सॉफ्टवेयर कंप्यूटर स्क्रीन पर लिखे टेक्स्ट को पढ़कर सुनाता है। (उदाहरण- JAWS, और मुफ्त ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर NVDA)।
- **ब्रेल डिस्प्ले (Refreshable Braille Display):** यह एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है जो स्क्रीन के टेक्स्ट को स्पर्शनीय ब्रेल पिन में बदल देता है।
- **ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकॉग्निशन (OCR):** छपी हुई किताब के पन्ने को स्कैन करके उसे ऑडियो में बदलने वाली तकनीक (जैसे- KIBO ऐप)।

2. श्रवणबाधिता (Hearing Impairment - HI) के लिए:

- **एफएम सिस्टम (FM Systems):** यह समावेशी कक्षा के लिए सबसे बेहतरीन तकनीक है। इसमें शिक्षक एक कॉलर माइक पहनता है, और उसकी आवाज़ कक्षा के शोर (Background noise) को काटकर सीधे श्रवणबाधित बच्चे के 'हियरिंग एड' में जाती है।
- **कॉक्लियर इम्प्लांट (Cochlear Implant):** यह कोई बाहरी उपकरण नहीं, बल्कि शल्य चिकित्सा (Surgery) द्वारा मस्तिष्क की श्रवण तंत्रिका (Auditory nerve) में लगाया गया एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है।
- **क्लोज्ड कैप्शनिंग (Closed Captioning):** स्मार्टबोर्ड पर वीडियो दिखाते समय नीचे आने वाले 'सबटाइटल्स' (Subtitles)।

3. वाक् और भाषा अक्षमता तथा ऑटिज़्म (Speech Impairment & ASD) के लिए:

- **संवर्धित और वैकल्पिक संचार (AAC - Augmentative and Alternative Communication):** जो बच्चे बोल नहीं सकते (Non-verbal), उनके लिए यह तकनीक उनकी आवाज़ है।
 - **लो-टेक AAC:** PECS (चित्र विनिमय संचार प्रणाली - जहाँ बच्चा अपनी ज़रूरत बताने के लिए पानी या सेब का चित्र कार्ड देता है)।
 - **हाई-टेक AAC:** अवाज़ ऐप (Avaz App) या प्रोलोको2गो (Proloquo2Go) जैसे सॉफ्टवेयर, जहाँ बच्चा स्क्रीन पर चित्रों को छूता है और टैबलेट उस वाक्य को कंप्यूटर जनित आवाज़ में 'बोलकर' सुनाता है (Speech Generating Devices)।

4. विशिष्ट अधिगम अक्षमता (Specific Learning Disability - SLD) के लिए:

- **डिस्लेक्सिया के लिए:** 'टेक्स्ट-टू-स्पीच' (Text-to-Speech - TTS) सॉफ्टवेयर। जब बच्चा पढ़ नहीं पाता, तो कंप्यूटर उसे किताब पढ़कर सुनाता है। साथ ही 'ऑडियोबुक्स' (Audiobooks)।
- **डिसग्राफिया के लिए:** 'स्पीच-टू-टेक्स्ट' (Speech-to-Text) सॉफ्टवेयर (जैसे- Google Voice Typing)। यदि बच्चे के दिमाग में विचार हैं लेकिन वह पेन से लिख नहीं पाता, तो वह माइक में बोलता है और कंप्यूटर उसे टाइप कर देता है।

5. गंभीर शारीरिक अक्षमता (Physical / Locomotor Disability / Cerebral Palsy) के लिए:

- **अडैप्टिव कीबोर्ड (Adaptive Keyboards):** बड़े बटनों वाले कीबोर्ड, ताकि जिनके हाथों में कंपन (Tremors) है, वे गलत बटन न दबाएं।
- **स्विच एक्सेस (Switch Access):** जिन बच्चों का अपने हाथों पर बिल्कुल नियंत्रण नहीं है, वे सिर या कोहनी से एक बड़ा 'स्विच' दबाकर पूरे कंप्यूटर को नियंत्रित कर सकते हैं।
- **आई-ट्रैकिंग तकनीक (Eye-tracking):** यह सबसे उन्नत तकनीक है, जहाँ स्टीफन हॉकिंग की तरह व्यक्ति अपनी आँखों की पुतलियों की गति से कंप्यूटर माउस को चलाता है।

5. यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग (UDL) और ICT का एकीकरण

प्रौद्योगिकी के बिना UDL (यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग) को कक्षा में पूरी तरह से लागू करना लगभग असंभव है। तकनीक UDL के तीनों सिद्धांतों को पोषित करती है:

- **प्रस्तुतीकरण (Representation):** डिजिटल पाठ्यपुस्तकों को बड़ा किया जा सकता है (Zoom), उनके रंग बदले जा सकते हैं, या उन्हें ऑडियो में बदला जा सकता है।
- **अभिव्यक्ति (Expression):** तकनीक बच्चे को अपनी समझ व्यक्त करने के कई तरीके देती है। वह पेन से लिखने के बजाय टाइप कर सकता है, पॉडकास्ट रिकॉर्ड कर सकता है, या वीडियो बना सकता है।
- **संलग्नता (Engagement):** इंटरैक्टिव क्विज़ (जैसे- Kahoot) या शैक्षिक गेम बच्चों का ध्यान केंद्रित रखते हैं और उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करते हैं।

प्रश्न 1: "आप एक 'विशेष शिक्षक' (Special Educator) क्यों बनना चाहते हैं?"

आदर्श उत्तर: "सर/मैम, मैं विशेष शिक्षक इसलिए नहीं बनना चाहता क्योंकि मुझे इन बच्चों पर दया (Sympathy) आती है या मैं कोई समाज सेवा करना चाहता हूँ। मैं इस पेशे में इसलिए हूँ क्योंकि मुझे 'हर बच्चे की सीखने की क्षमता' (Potential to learn) पर दृढ़ विश्वास है। जहाँ एक सामान्य समाज किसी ऑटिस्टिक या बौद्धिक रूप से अक्षम बच्चे को उसकी 'कमियों' (Deficits) की दृष्टि से देखता है, वहीं मैं एक पेशेवर के रूप में उसकी 'क्षमताओं' को देखता हूँ। मुझे मनोविज्ञान, UDL (यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग) और व्यवहार प्रबंधन (ABA) की उन वैज्ञानिक तकनीकों में गहरी रुचि है जो एक अदृश्य बच्चे को समाज की मुख्यधारा में ला सकती हैं। मेरा उद्देश्य इन बच्चों को 'सहानुभूति' नहीं, बल्कि 'सशक्तिकरण' (Empowerment) और स्वतंत्र जीवन जीने का 'अधिकार' प्रदान करना है। यही कारण है कि मैंने इसे अपना करियर चुना है।"

प्रश्न 2: "एक सामान्य शिक्षक (General Educator) और एक विशेष शिक्षक (Special Educator) की भूमिका में क्या तकनीकी अंतर है?"

आदर्श उत्तर: "सर/मैम, दोनों का अंतिम लक्ष्य बच्चे का विकास है, लेकिन उनके दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली में एक स्पष्ट तकनीकी अंतर है:

1. **ध्यान का केंद्र (Focus):** एक सामान्य शिक्षक का मुख्य ध्यान 'पाठ्यक्रम' (Content - क्या पढ़ाना है) पर होता है। वह विषय का विशेषज्ञ होता है। जबकि, एक विशेष शिक्षक का मुख्य ध्यान 'शिक्षण रणनीति' (Pedagogy - कैसे पढ़ाना है) पर होता है। वह रणनीतियों और अनुकूलन (Adaptation) का विशेषज्ञ होता है।
2. **दृष्टिकोण:** सामान्य शिक्षक अक्सर पूरी कक्षा को 'एक समूह' (Macro-level) के रूप में पढ़ाता है, जबकि विशेष शिक्षक बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकताओं (Micro-level) के अनुसार 'व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम' (IEP) बनाता है।
3. **समावेशी कक्षा में:** समावेशी कक्षा में विशेष शिक्षक सामान्य शिक्षक का 'सहायक' नहीं होता, बल्कि उसका 'सह-शिक्षक' (Co-teacher) होता है। सामान्य शिक्षक विज्ञान का सिद्धांत बताता है, और विशेष शिक्षक उस सिद्धांत को कार्य विश्लेषण (Task Analysis) और बहु-संवेदी TLM के माध्यम से उस विशेष बच्चे के लिए सुलभ (Accessible) बनाता है।"

प्रश्न 3: "समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) और एकीकृत शिक्षा (Integrated Education) के बीच क्या अंतर है?"

आदर्श उत्तर: "सर/मैम, इन दोनों के बीच केवल शब्दों का नहीं, बल्कि 'दर्शन' (Philosophy) का अंतर है। एकीकृत शिक्षा (Integrated Education) का मॉडल कहता है कि 'बच्चे में कमी है, उसे सुधारो'। इसमें विशेष

बच्चे को सामान्य स्कूल में प्रवेश तो दे दिया जाता है, लेकिन स्कूल अपने नियमों, भवन या पढ़ाने के तरीके में कोई बदलाव नहीं करता। बच्चे को खुद को स्कूल के सिस्टम के अनुसार ढालना पड़ता है (Fitting the child to the system)। इसके विपरीत, **समावेशी शिक्षा (Inclusive Education)** 'मानवाधिकार मॉडल' पर आधारित है। यह मानती है कि कमी बच्चे में नहीं, बल्कि सिस्टम में है। इसमें स्कूल अपने भौतिक वातावरण (जैसे रैंप बनाना), शिक्षण विधियों (जैसे UDL) और मूल्यांकन प्रणाली में लचीलापन लाता है ताकि वह हर बच्चे की विविधता के अनुकूल बन सके (Fitting the system to the child)। KVS और NVS इसी समावेशी मॉडल पर कार्य करते हैं।"

प्रश्न 4: "RPWD अधिनियम 2016 क्या है और एक विशेष शिक्षक के रूप में यह आपके लिए क्यों महत्वपूर्ण है?"

आदर्श उत्तर: "सर/मैम, 'दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016' (RPWD Act) भारत में विशेष शिक्षा का सबसे बड़ा वैधानिक आधार (Legal foundation) है। यह पुराने 1995 के कानून की 7 अक्षमताओं को बढ़ाकर 21 अक्षमताओं को मान्यता देता है। एक विशेष शिक्षक के रूप में यह मेरे लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि:

1. **मानवाधिकार दृष्टिकोण:** यह 'चिकित्सीय मॉडल' (Medical model) को खारिज करके 'सामाजिक मॉडल' को अपनाता है।
2. **शून्य अस्वीकृति (Zero Rejection):** इस अधिनियम की धारा 16 स्पष्ट करती है कि कोई भी सरकारी शिक्षण संस्थान (जैसे KVS/NVS) किसी भी बच्चे को उसकी अक्षमता के आधार पर प्रवेश देने से मना नहीं कर सकता।
3. **उचित समायोजन (Reasonable Accommodation):** यह अधिनियम मुझे वैधानिक अधिकार और कर्तव्य देता है कि मैं बच्चे की आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम, TLM और परीक्षा प्रणाली में उचित बदलाव (जैसे अतिरिक्त समय या राइटर) सुनिश्चित करूँ।"

प्रश्न 5: "IEP (व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम) क्या है? इसके मुख्य घटक (Components) क्या होते हैं?"

आदर्श उत्तर: "सर/मैम, IEP (Individualized Education Program) विशेष शिक्षा की रीढ़ है। यह एक लिखित, वैधानिक और शैक्षणिक दस्तावेज है जो किसी विशिष्ट बच्चे की अनूठी सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाया जाता है। इसे एक 'बहु-विषयक टीम' (Multi-disciplinary Team - जिसमें विशेष शिक्षक, माता-पिता, सामान्य शिक्षक और मनोवैज्ञानिक शामिल होते हैं) द्वारा तैयार किया जाता है। इसके मुख्य 4 घटक होते हैं:

1. **वर्तमान प्रदर्शन स्तर (CLOP - Current Level of Performance):** बच्चा अभी शैक्षणिक और व्यावहारिक रूप से कहाँ खड़ा है।
2. **वार्षिक और अल्पकालिक लक्ष्य (SMART Goals):** बच्चे को एक साल में और अगले तीन महीनों में क्या हासिल करना है। (लक्ष्य विशिष्ट, मापने योग्य और यथार्थवादी होने चाहिए)।
3. **विशेष शिक्षा और संबंधित सेवाएँ:** बच्चे को कौन सा 'उचित समायोजन' (Accommodation), स्पीच थेरेपी या विशेष TLM दिया जाएगा।
4. **मूल्यांकन (Evaluation):** यह जांचने का तरीका कि बच्चा लक्ष्यों को प्राप्त कर रहा है या नहीं।"

.....
.....
प्रश्न 256: "सिचुएशन: स्कूल के 'वार्षिक उत्सव' (Annual Day) में एक 'सेरेब्रल पाल्सी' (CP - व्हीलचेयर वाले) बच्चे को डांस परफॉरमेंस से बाहर कर दिया जाता है क्योंकि सांस्कृतिक प्रभारी का मानना है कि 'इससे ग्रुप की कोरियोग्राफी खराब होगी।' आप उसका समावेशन कैसे सुनिश्चित करेंगे?"

आदर्श उत्तर: "सर/मैम, सांस्कृतिक कार्यक्रमों से बाहर करना स्पष्ट रूप से 'सामाजिक बहिष्कार' (Social Exclusion) है। मैं सांस्कृतिक प्रभारी से बहस नहीं करूंगा, बल्कि उन्हें 'समावेशन की सुंदरता' समझाऊंगा। मैं उनसे कहूंगा कि समावेशन का अर्थ 'परफेक्ट और एक जैसा दिखना' नहीं है, बल्कि 'विविधता का जश्न मनाना' है। मैं बच्चे की 'व्हीलचेयर' को बाधा मानने के बजाय उसे परफॉरमेंस का एक 'प्रॉप' (Prop) बनाने का सुझाव दूंगा। हम उस बच्चे को समूह के 'केंद्र' (Center) में रख सकते हैं और उसे केवल हाथों और चेहरे के भावों (Upper body movements) वाला स्टेप दे सकते हैं। मेरी यह वकालत न केवल उस बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ाएगी, बल्कि दर्शकों को भी एक शक्तिशाली संदेश देगी।"

प्रश्न 257: "(क्रॉस-प्रश्न) एक 'दृष्टिबाधित' (VI) बच्चा अक्सर शिकायत करता है कि सड़क या स्कूल में अजनबी उसे बिना पूछे पकड़कर रास्ता पार कराने लगते हैं, जिससे वह घबरा जाता है। आप उसे 'स्व-वकालत' (Self-Advocacy) कैसे सिखाएंगे?"

आदर्श उत्तर: "सर/मैम, बिना पूछे छूना बच्चे की 'शारीरिक स्वायत्तता' (Bodily Autonomy) का हनन है। लोग दयावश ऐसा करते हैं, लेकिन यह बच्चे को कमजोर महसूस कराता है। मैं उस बच्चे को 'दृढ़ता' (Assertiveness) का व्यावहारिक प्रशिक्षण दूंगा। मैं उसे सिखाऊंगा कि जब भी कोई अजनबी उसे बिना पूछे छुए या खींचे, तो वह तुरंत अपनी सफेद छड़ी (White Cane) का उपयोग कर एक कदम पीछे हटे और बहुत ही स्पष्ट तथा विनम्र आवाज़ में कहे— 'धन्यवाद, लेकिन मुझे मदद की आवश्यकता नहीं है,' या 'कृपया मदद करने से पहले मुझसे पूछ लें कि मुझे क्या चाहिए।' यह छोटा सा वाक्य उसे दया का पात्र (Victim) बनने से रोककर अपने जीवन का नियंत्रक बनाएगा।"

प्रश्न 258: "आप कक्षा 6 से 8 के 'सामान्य किशोर छात्रों' को एक 'ऑटिस्टिक' बच्चे के लिए 'पीयर एडवोकेट्स' (Peer Advocates - सहपाठी रक्षक) में कैसे बदलेंगे, ताकि आपको स्कूल में हमेशा उसकी रक्षा न करनी पड़े?"

आदर्श उत्तर: "सर/मैम, एक विशेष शिक्षक हर जगह उपस्थित नहीं हो सकता (जैसे कैंटीन, खेल का मैदान या वाशरूम), इसलिए 'सहपाठियों का रक्षक बनना' सबसे मज़बूत सुरक्षा चक्र है। मैं कक्षा के 3-4 सबसे प्रभावशाली और संवेदनशील (Leaders) बच्चों को चुनकर उन्हें ऑटिज्म के प्रति शिक्षित करूंगा। मैं उन्हें समझाऊंगा कि ऑटिस्टिक बच्चे का व्यवहार 'अजीब' नहीं, बल्कि 'अलग' है। मैं उन्हें सशक्त करूंगा कि यदि कोई अन्य बच्चा (या सीनियर) ऑटिस्टिक बच्चे को चिढ़ाए, तो वे मूकदर्शक (Bystander) न रहें, बल्कि आगे आकर स्पष्ट रूप से कहें— 'उसे परेशान मत करो, वह हमारा दोस्त है।' जब बच्चे ही बच्चे की वकालत करने लगते हैं, तो स्कूल में 'बदमाशी' (Bullying) के खिलाफ 'जीरो-टॉलरेंस' का सबसे सुरक्षित वातावरण बनता है।"

डेमो क्लास के लिए महत्वपूर्ण विषय और बहु-संवेदी (Multi-sensory) शिक्षण रणनीतियाँ

(कक्षा 1 से 8: विज्ञान, गणित, पर्यावरण और भाषा - हिंदी और अंग्रेजी)

प्रस्तावना: एक विशेष शिक्षक का डेमो क्लास कभी भी चॉक और ब्लैकबोर्ड तक सीमित नहीं होता। यह 'यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग' (UDL) और 'VAKT' (दृश्य, श्रव्य, गामक, स्पर्शनीय) दृष्टिकोण का एक जीवंत प्रदर्शन है। इस अध्याय में कक्षा 1 से 8 तक के विज्ञान, गणित और पर्यावरण (EVS) के उन सबसे महत्वपूर्ण विषयों का चरण-दर-चरण विश्लेषण किया गया है, जिन्हें इंटरव्यू पैनल अक्सर डेमो के लिए चुनने को कहता है।

भाग 1: विज्ञान (Science) - कक्षा 1 से 8 तक

विज्ञान एक ऐसा विषय है जो प्रयोगों (Experiments) और वास्तविक जीवन के अनुभवों पर आधारित है। विशेष बच्चों के लिए विज्ञान अमूर्त (Abstract) नहीं होना चाहिए, बल्कि वह ऐसा होना चाहिए जिसे वे छू सकें, सूंघ सकें और महसूस कर सकें।

डेमो 1: सजीव और निर्जीव वस्तुएं (Living and Non-Living Things)

- **कक्षा स्तर:** 1 और 2
- **शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM):** एक असली गमले में लगा पौधा, एक प्लास्टिक का कृत्रिम पौधा, एक कछुआ (यदि संभव हो या खिलौना जो चलता हो), एक पत्थर, पानी की बोतल।

विशेष शिक्षा रणनीतियाँ (अक्षमता के अनुसार):

- **दृष्टिबाधिता (VI):** बच्चे को असली पौधे की पत्तियों और प्लास्टिक के पौधे की पत्तियों को छूकर (Tactile) अंतर महसूस करने दें। उन्हें पत्थर और असली मिट्टी का स्पर्श कराएं।
- **श्रवणबाधिता (HI):** सजीव और निर्जीव के लिए स्पष्ट 'सांकेतिक भाषा' (Sign Language) का प्रयोग करें। फ्लैशकार्ड पर 'सांस लेना' (Breathing), 'बढ़ना' (Growing) के चित्र दिखाएं।
- **बौद्धिक अक्षमता (ID):** बहुत सरल वाक्यों का प्रयोग करें। "जो खाना खाता है और बढ़ता है, वह सजीव है।" उनसे कहें— "क्या पत्थर खाना खाता है? नहीं!"

- **ऑटिज़्म (ASD):** उन्हें एक 'सॉर्टिंग एक्टिविटी' (Sorting activity) दें। दो टोकरियां रखें— एक में सजीव के चित्र/वस्तुएं और दूसरे में निर्जीव की वस्तुएं डालने को कहें।

डेमो क्लास प्रस्तुतीकरण (शिक्षक का संवाद): "सुप्रभात बच्चों! आज हम दो नए दोस्तों से मिलेंगे। (असली पौधा और पत्थर दिखाते हुए)। अच्छा बताओ, अगर मैं इस पौधे को रोज़ पानी दूँ, तो क्या होगा? यह बड़ा हो जाएगा! लेकिन अगर मैं इस पत्थर को रोज़ पानी दूँ, तो क्या यह बड़ा होगा? नहीं! क्योंकि पौधे सांस लेते हैं, बढ़ते हैं (हाथों के इशारे से बड़ा होते हुए दिखाएं), ये 'सजीव' हैं। पत्थर 'निर्जीव' है।"

महारथ Academy

 **Learn • Practice • Succeed**





India's Trusted Platform for Competitive Exam Notes & Smart Study Resources

Our Mission

To provide **high-quality, affordable and exam-focused learning material** to every student.



Connect With Us

-  YouTube | <https://youtube.com/@maharathacademy>
-  Instagram | <https://instagram.com/maharathacademy>
-  Facebook | <https://facebook.com/maharathacademy>
-  Telegram | <https://t.me/maharathacademy>
-  WhatsApp Channel |
<https://chat.whatsapp.com/Jk5IBkMzMyL0oxjheDMTbB>